Filler Form

UGC NET JRF
Paper 2 Sanskrit
Free Classes

JRF का जलवा

From:17th January 2022

BY : Nidhu Chaudhary

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

….Students feedback….

kanika-JK- • 1d ago

नमो नमः महोदय

Online Sanskrit • 1d ago

बहुः शोभनं महोदया

Priya Maitra • 1d ago

Mam Thank you so much

8209837844 www.ugc-net.com

वेदों का रचना काल

वेदों का रचनाकाल-निर्धारण वैदिक साहित्येतिहास की एक जटिल समस्या है।

विभिन्न विद्वानों ने भाषा, रचनाशैली, धर्म एवं दर्शन, भूमर्भशास्त्र, ज्योतिष, उत्खनन में प्राप्त सामग्री, अभिलेख आदि के आधार पर वेदों का रचनाकाल निर्धारित करने का प्रयास किया है, किन्तु इनसे अभी तक कोई सर्वमान्य रचनाकाल निर्धारित नहीं हो सकता है।

इसका कारण यही है कि सबका किसी न किसी मान्यता के साथ पूर्वाग्रह है।

18वीं शती के अन्त तक भारतीय विद्वानों की यह धारणा थी कि वेद अपौरुषेय है, अर्थात किसी मनुष्य की रचना नहीं है।

8209837844 www.ugc-net.com

हिताओं, ब्राह्मणों, दार्शनिक ग्रन्थों, पुराणों तथा अन्य परवर्ती साहित्य में अनेक उद्धरण मिलते हैं जिनमें वेद के अपौरुषेयत्व का कथन मिलता है।

वेद-भाष्यकारों की भी परम्परा वेद को अपौरुषेय ही मानती रही।

इस प्रकार वेद के अपौरुषेयत्व की धारणा उसके कालनिर्धारण की सम्भावना को ही अस्वीकार कर देती है।

दूसरी तरफ 19वीं सदी के प्रारम्भ से ही, जबकि पाश्चात्य विद्वानों के द्वारा वेदाध्ययन का महत्त्वपूर्ण प्रयास किया गया, यह धारणा प्रतिष्ठित होने लगी कि वेद अपौरुषेय नहीं, मानव ऋषियों की रचना है; अतएव उनके कालनिर्धारण की सम्भावना को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

फलस्वरूप, अनेक पाश्चात्य विद्वानों के द्वारा इस दिशा में प्रयास किया गया।

8209837844 www.ugc-net.com

आर्य-संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है, इस तथ्य को चूँकि पाश्चात्य मानसिकता अंगीकार न कर सकी, इसलिये वेदों का रचनाकाल ईसा से सहस्त्राब्दियों पूर्व मानना उनके लिये सम्भव नहीं था,

क्योंकि विश्व की अन्य संस्कृतियों की सत्ता इतने सुदूरकाल तक प्रमाणित नहीं हो सकती थी, यद्यपि उन्होंने इतना अवश्य स्वीकार किया कि वेद विश्व का प्रचीनतम साहित्य है।

इस प्रकार वेद विश्व का प्राचीनतम वाड्मय है इस विषय में भारतीय तथा पाश्चात्य सभी विद्वान् एकमत हैं, वैमत्य केवल इस बात में है कि इसकी प्राचीनता कालावधि में कहाँ रखी जाय।

वेद के रचनाकाल-निर्धारण की दिशा में अब तक विद्वानों ने जो कार्य किये हैं तथा एतद्विषयक अपने मत स्थापित किये है उनका यहाँ संक्षेप में उल्लेख किया जाता है।

8209837844 www.ugc-net.com

मैक्समूलर का मत

बौद्ध धर्म के आविर्भावकाल को आधार बनाकर सर्वप्रथम मैक्समूलर ने वेद के रचनाकाल को सुनिश्चित करने का प्रयास किया।

उसने यह माना कि जिस प्रकार क्रिश्चियन वर्ष प्रारम्भ दुनिया के इतिहास को दो भागों में बांटता है, उसी प्रकार बुद्ध-युग भारत के इतिहास को दो भागों में बांटता है।

बुद्ध के कालनिर्धारण में उसने ग्रीक इतिहासकारों को प्रमाण मानकर बुद्ध का निर्वाणकाल 477 ई.पू. माना जो चन्द्रगुप्त मौर्य के राजसिंहासन पर बैठने से 162 वर्ष पूर्व का है।

8209837844 www.ugc-net.com

ग्रीक इतिहासकारों के अनुसार 325 ई.पू. में सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया था और पश्चिमोत्तर भारत को अपने अधीन कर लिया था।

सिकन्दर के उत्तराधिकारियों की मृत्यु के बाद 317 ई.पू. में चन्द्रगुप्त ने पाटलिपुत्र पर अधिकार किया और 315 ई.पू. में सम्राट बन गया। ग्रीक इतिहासकारों द्वारा उद्धृत सैण्ड्राकोटस (Sandracottus) को मैक्समूलर ने चन्द्रगुप्त मौर्य समझा।

वैदिक काल, वेद ग्रंथों की रचना के बाद ही अपने चरम पर पहुंचता है, पूरे उत्तरी भारत में विभिन्न शाखाओं की स्थापना के साथ, जो कि ब्राह्मण ग्रंथों के अर्थों के साथ मंत्र संहिताओं को उनके अर्थ की चर्चा करता है, बुद्ध और पाणिनी के काल में भी वेदों का बहुत अध्ययन-अध्यापन का प्रचार था यह भी प्रमाणित है।

8209837844 www.ugc-net.com

वैदिक साहित्य की रचना किसी एक समय में नहीं हुयी थी।

वेदों में वैवस्वत मनु के समय से लेकर महाभारत काल तक के लगभग सभी मन्त्र संग्रहीत हैं।

इस प्रकार वैवस्वत मनु के समय से लेकर महाभारत तक (लगभग 1500 वर्षों तक) वैदिक सूत्रों की निरन्तर रचना होती रही।

इस युग में जिस सभ्यता तथा संस्कृति का निर्माण हुआ-उसे ही वैदिक युग कहा जाता है।

वैदिक साहित्य का प्रारम्भिक समय ऋग्वेद की प्राचीनता के आधार पर ही निश्चित किया गया है। दुर्भाग्यवश ऐसा कोई भी सुनिश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं है जिसके आधार पर वैदिक साहित्य की इस सर्वप्रथम रचना का काल निर्धारण किया जा सके।

विभिन्न मतों के विवेचन के आधार पर तथा अति उदार एवं उग्रविचारों से बच-बचाकर हम अनुमान के आधार पर कह सकते हैं कि वैदिक साहित्य का प्रारम्भ 2000 या 2500 वर्ष ई० पू० के लगभग हुआ था।

8209837844 www.ugc-net.com

ए . वेबर महोदय

ए . वेबर महोदय ने सर्वप्रथम सन् 1852 में अपनी पुस्तक History of Indian Literature (भारतीय साहित्य का इतिहास) के प्रथम संस्करण में वेदों का काल - निर्धारण करने का प्रयत्न किया है ।

इनका मानना है कि वेद कितने प्राचीन हैं , यह ठीक - ठीक कहना संभव नहीं है , किंतु 1500 ई.पू. तक इसकी रचना हो चुकी थी , इसमें कोई संदेह नहीं है ।

8209837844 www.ugc-net.com

मैक्समूलर

मैक्समूलर ने (सन् 1859 में) छंद , मंत्र , ब्राह्मण और सूत्र को चार युग के रूप में माना है। एक युग से दूसरे युग के विकास का समय 200 वर्षों का एक कालखंड है।

उनके अनुसार , बुद्ध के समय तक वैदिक साहित्य की रचना पूरी हो चुकी थी। शाक्य मुनि बुद्ध से 600 वर्ष पूर्व हुए।

इस प्रकार उनसे 200 वर्ष पूर्व तक यानी 600-400 ई.पू. सूत्र - काल , 600-800 ई.पू. ब्राह्मण - काल , 800-1000 ई.पू. -मंत्र - काल और इससे पूर्व छंद : काल का समय है।

चूँकि वेदों के मंत्र छंदोबद्ध हैं , अत : इनका समय 1000-1200 ई.पू. निश्चित किया जा - सकता है। इस प्रकार वेदों की रचना आज से लगभग (2012 + 1200) 3212 वर्ष पूर्व हुई होगी।

8209837844 www.ugc-net.com

जर्मन विद्वान् जैकोबी

जर्मन विद्वान् जैकोबी ज्योतिषशास्त्र की गणना - द्वारा ' ऋग्वेद ' के माण्डूक - सूक्त की ऋचा ' देवहितिं जगुपुर्द्वादशस्य ... तप्ता धर्मा अश्नुवते विसर्गम् । (7/103/9) के आधार पर वेदों का रचनाकाल 2500 ई.पू. स्वीकार करते हैं ।

8209837844 www.ugc-net.com

बालगंगाधर तिलक

वेदों के रचना - काल - निर्णय के संबंध में बालगंगाधर तिलक ने ज्योतिषशास्त्र का आधार लेकर वसन्तसंपातम् (Vernal Equinix) को अधिकृत्य कर स्वरचित ' ओरायन ' (Orion) नामक ग्रंथ में कहा है कि 4000 से 6000 ई.पू. के मध्य ' ऋग्वेद ' की ऋचाओं की रचना हुई होगी ।

पुनः वे अपनी पुस्तक ' आर्कटिक होम इन द वेदाज (Arctic Home in the Vedas) में 1000 ई.पू. माना है ।

उनका यह भी मानना है कि लगभग 2500 ई.पू. तक ' ऋग्वेद ' की रचना हो चुकी थी । तिलक महोदय ने वैदिक काल को 4 भागों में विभक्त किया है ।

8209837844 www.ugc-net.com

1. अदिति काल - 4000-6000 ई.पू. गद्य - पद्यात्मक मंत्र ।

2. मृगशिरा काल - 2500-4000 ई.पू. ऋक् - सूक्त

3. कृत्तिका काल - 1400-2500 ई.पू. चारों वेदों का संकलन तथा ब्राह्मण - ग्रंथ ।

4. अंतिम काल - 500-1400 ई.पू. सूत्र एवं दर्शन - ग्रंथ । तिलक का मानना है कि ब्राह्मणग्रंथों के समय नक्षत्रों की गणना कृत्तिका - नक्षत्र में होती थी ।

इस नक्षत्र में दिन - रात बराबर होते हैं । अत : ब्राह्मणग्रंथों की रचना 2500 ई.पू. में हुई होगी । संहिताओं के युग में दिन और रात बराबर होते थे । ' ऋग्वेद ' के मंत्रों की रचना तब हुई है , जब सूर्य मृगशिरा - नक्षत्र में होता था ।

यह समय 6500 वर्ष पहले का है , अतः संहिताओं की रचना का समय 2500-4000 ई.पू. का है ।

8209837844 www.ugc-net.com

एम् . विन्टरनित्ज महोदय

एम् . विन्टरनित्ज महोदय ने ब्राह्मणग्रंथों , पाणिनि – व्याकरण , वैदिक और संस्कृत भाषा के साथ – साथ अशोककालीन शिलालेखों की भाषा का अध्ययन कर ' ऋग्वेद ' का रचना – काल 4500 ई.पू. से 6000 ई.पू. के बीच माना है ।

8209837844 www.ugc-net.com

भारतीय परंपरागत विचार

1. पं . शंकर बालकृष्ण दीक्षित ने ' शतपथब्राह्मण ' का मंत्र ' एक ब्रद्वे त्रीणि चत्वारि ...

अन्यानि नक्षत्राणि प्राच्चा दिश : च्यवन्ते । (2.1.2)

को आधार मानकर नक्षत्र - निर्देश को प्रमाण में लेकर ज्योतिष गणना कर ' शतपथब्राह्मण ' का काल 3000 ई.पू. स्वीकार करते हैं । वे ' ऋग्वेद ' को ' शतपथब्राह्मण ' से प्राचीन मानकर इसका समय 3500 ई.पू. स्वीकार करते हैं ।

2. अविनाश चंद्र दास ने ' ऋग्वैदिक इंडिया ' (Rigvedic India) नामक अपनी पुस्तक में वेदों का रचना - काल कई लाख वर्ष पूर्व मानते हैं।

इन्होंने आर्यावर्त के चारों दिशाओं और चारों ओर के समुद्रों की भौगोलिक स्थिति को गणना - पद्धति का आधार माना और ये वेदों का रचना - काल 25,000 वर्ष पूर्व मानते हैं।

इस संदर्भ में वे ' ऋग्वेद ' की एक अधोलिखित ऋचा का भी उदाहरण देते हैं एका चेतत् सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्य आसमुद्रात्। (7/95/2) उनका कहना है कि सरस्वती नदी समुद्र में मिलती है। वह स्थल राजस्थान में था , लेकिन अब समुद्र तथा नदी दोनों का लोप हो गया। यह घटना 2500 ई.पू. की है।

8209837844 www.ugc-net.com

3. दयानन्द सरस्वती- इन्होंने मंत्रों के आधार पर स्पष्ट कर दिया है कि वेदों का रचना - काल सृष्टि का प्रारंभिक युग माना जा सकता है , क्योंकि पुरुष - सूक्त में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि यज्ञ- रूपी पुरुष ने ही वेदों की रचना की है

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छंदान्सि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्य तस्मात् जायत ॥

इस प्रकार वेद अपौरुषेय हैं । (ऋग्वेद -10 / 90 / 9)

8209837844 www.ugc-net.com

4. पं . दीनानाथ शास्त्री - शास्त्रीजी ने ' वेदकाल - निर्णय ' नामक अपनी पुस्तक में ज्योतिष के आधार पर यह सिद्ध किया है कि वेदों का रचना - काल अब से 3 लाख वर्ष पूर्व का है ।

5. भंडारकर - डॉ . आर् . जी . भंडारकर ने वेदों का रचना - काल 600 ई.पू. माना है ।

सिकंदर के आक्रमण के समय ग्रीकों ने राजवंशियों को एकत्र किया था ।

चंद्रगुप्त से पूर्व 154 राजाओं ने राज्य किया था और वह समय वैदिक - काल ही होगा ।

अत : इससे पूर्व ' ऋग्वेद ' की रचना हो चुकी होगी ।

8209837844 www.ugc-net.com

6. जगद्गुरु शंकराचार्य - शंकराचार्य ने वेदों का सर्वज्ञानमयत्व मानते हुए यह युक्तिवाद प्रस्तुत किया है –

महतः ऋग्वेदादेः शास्त्रस्य अनेक विद्यास्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवत् सर्वार्थावद्योतिनः सर्वज्ञकल्पस्य योनिः कारणं ब्रह्म । न हि ईदृशस्य शास्त्रस्य ऋग्वेदादि लक्षणस्य सर्वज्ञगुणान्वितस्य सर्वज्ञात् अन्यतः संभव अस्ति ।

अर्थात् ऋग्वेदादि महान् शास्त्र अनेक विद्या - स्थानों से विकसित हुआ है और यह प्रदीपवत् समस्त विषयों को प्रकाशित करता है

8209837844 www.ugc-net.com

इस प्रकार के सर्वज्ञान - संपन्न - शास्त्र का उत्पत्ति - स्थान ब्रह्म ही हो सकता है .

क्योंकि सर्वज्ञ परब्रह्म परमात्मा के अतिरिक्त अन्य किसी से ऋग्वेदादि संपन्न शास्त्र की उत्पत्ति संभव ही नहीं हो सकता ।

(सायणकृत कृष्ण यजुर्वेद - उपोद्धातः)

8209837844

www.ugc-net.com

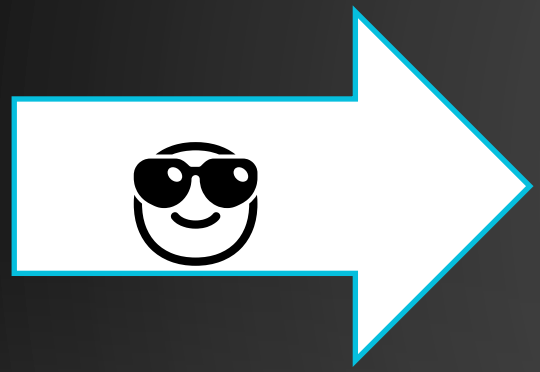

HOW’S THE CLASS..

HOW’S THE JOSH..

Like and share

FEEDBACK

For More Information

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com

8209837844